Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2022, VOL- 10/73

आधुनिक संप्रेषण (सूचना कौशल) के विकास में सांवेगिक बुद्धि की उपादेयता

उम्मेद सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग), ईशान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी
ग्रेटर नोएडा यू.पी. 201009

Paper Received On: 25 OCTOBER 2022
Peer Reviewed On: 31 OCTOBER 2022
Published On: 01 NOVEMBER 2022

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर किए गए अध्ययनों नें कुछ प्रमुख शोध दिशाओं और कुछ अलग दृष्टिकोणों की घटना को चिन्हित किया है, जो इस क्षेत्र में विकास की पूरी प्रकिया में बढती रुचि को दर्शाता है।

भावात्मक बुद्धिमत्ता शब्द को सबसे पहले लोगों से परिचित कराने वाले व्यक्ति *वेन पायनें* थे, परन्तु वे एक शोधार्थी थे इस कारण उनके विचार उनके शोध तक सीमित रह गए।*1990* में येल विश्वविद्यालय के जॉन मेयर और पीटर सालोवी ने सर्वप्रथम सांवेगिक बुद्धि शब्द को अपनाया। बाद में दोनों नें मिलकर सांवेगिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को विकसित किया।

इनके अनुसार भावात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को उत्पन्न करने की क्षमता को निर्दिष्ट करती है ताकि ये समर्थन विचार, भावनाओं और उनके अर्थ को समझनें तथा भावनात्मक और बौद्धिक विकास में सुधार करने के लिए भावनाओं को कुशलतापूर्वक

नियंत्रित कर सकें। जॉन मेयर और पीटर सालोवी ने इन क्षमताओ को चार कारकों में विभाजित किया –

- अशाब्दिक भावों कों समझना-Perciving emotion
- संज्ञानात्मक भावना की समझ-Understanding the emotion
- व्यक्त भावनाओं कों समझते हुए किया करना-Facilitating emotion
- भावना नियन्त्रण-Emotional control

डेनियल गोलमैंन नें 1995-96 में अपनी पुस्तक *Emotional Intelligence* में सांवेगिक बुद्धिमत्ता को एक नये रूप में प्रस्तुत किया। गोलमैन रूटजर्स विश्वविद्यालय में कनसोर्टियम फॉर रिसर्च इमोशनल इंटेलिजेन्स के चेयरमैन व संस्थापक थे। इन्होंने स्पष्ट किया कि व्यक्ति के विकास में उसकी बुद्धिलब्धि से ज्यादा उसकी सांवेगिक बुद्धिमत्ता का प्रभाव पड़ता है। इनका मत था कि यदि व्यक्ति की सफलता में 20% उसकी बुद्धि लब्धि का योगदान होता है तो 80% उसकी सांवेगिक बुद्धि का योगदान होता है।

गोलमैन ने मेयर और सैलोवी के सांवेगिक बुद्धिमत्ता के घटकों को आगे बढ़ाते हुए 5 तत्वों की व्याख्या की, जो निम्नवत् हैं-

आत्मनियंत्रण- आत्मनियंत्रण से तात्पर्य है- अपने संवेगों को नियंत्रित करना। इसका कदापि यह अर्थ नहीं कि अपने संवेगों को दबाकर रखा जाये बल्कि इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपने संवेगों को सही ढ़ंग से वातावरण के अनुकूल व्यक्त करे व नियंत्रण से बाहर न होने दे इसलिए जिन व्यक्तियों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता अधिक होती है वे क्रोध, निराशा से अपने जीवन को प्रभावित नहीं होने देते हैं।

आन्तरिक अभिप्रेरणा- जिन व्यक्तियों में सांवेगिक बुद्धि होती है, वे व्यक्ति अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिये हमेशा लगनशील रहते हैं तथा व्यक्ति यदि निराश है तो भी वह कार्य करता है तथा किसी तरह का लालच उन्हें कर्तव्य मार्ग से विचलित नहीं कर पाता है। इस सम्बन्ध में शोध से सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति की सफलता का बहुत बड़ा प्रतिशत अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आत्मजागृति- इसका व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है व्यक्ति अपने संवेगों से भलीभांति परिचित होता है साथ ही वह यह जानता है कि अपने भावों एवं संवेगों से, जिस रूप में वे उत्पन्न होते हैं, से परिचित होता है अर्थात् इसमें व्यक्ति यह जानता है कि किस कारण से यह संवेग उत्पन्न हुए हैं तथा यदि क्रोध में है तो उस कारण को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। इसमें व्यक्ति अपने भावों के आधार पर व्यवहार नहीं करता है बलकि उसमें छुपे हुए मूल को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है।

परानुभूति- यह वह तत्व है जिसमें व्यक्ति दूसरे के संवेगों व भावों को समझता है तथा उनके अशाब्दिक व्यवहार को समझ लेता है।

सामाजिक कौशल- इसका यह प्रमुख तत्व है जिसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध को बनाए रखता है क्योंकि सम्बन्ध तो कई लोग बनाते है परन्तु उनकों बनाये रखना इस तत्व का प्रमुख कार्य है। जिन व्यक्तियों में परानुभूति की क्षमता होती है वे दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध को सही ढंग से बना कर रखते है।

पारस्परिक सम्बन्ध- पारस्परिक संचार दो या दो से अधिक लोगों के बीच सुचनाओं का आदान प्रदान है। यह शोध का एक क्षेत्र भी है जो यह समझने का प्रयास करता है कि मनुष्य कैसे कई व्यक्तिगत और सम्बन्धपरक लक्ष्यों को पूरा करने के लिये मौखिक और अशाब्दिक संकेतों का उपयोग करता है।

कार्यस्थल में बेहतर पारस्परिक संचार को बढ़ावा देने वाला पोस्टर, 1930 के दशक के अन्त से 1940 के दशक के शुरूआत में पारस्परिक संचार अनुसंधान पूछताछ की कम से कम 6 श्रेणियों को सम्बोधित करता है-

1. आमने सामने का संचार- इस संचार के दौरान मनुष्य अपने मौखिक संचार और अशाब्दिक संचार को कैसे समायोजित और अनुकूलित करते हैं।
2. सन्देश कैसे उत्पन्न होते हैं।
3. अनिश्चितता व्यवहार और सूचना प्रबन्धन रणनीतियों को कैसे प्रभावित करती है।
4. भ्रामक संचार

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. सम्बन्धपरक द्वंदात्मकता।
6. सामाजिक अन्त:क्रियाएं जो प्रौद्योगिकी द्वारा मध्यस्थता की जाती हैं।

पारस्परिक संचार को अक्सर उन लोगों के बीच होने वाले संचार के रूप में परिभाषित किया जाता है जो अन्योन्याश्रित है और एक दूसरे के बारे में कुछ ज्ञान रखते हैं। उदाहरण के लिए एक बेटे और उसके पिता, एक नियोक्ता और एक कर्मचारी, दो बहनों इत्यादि।

यद्यपि पारस्परिक संचार अक्सर व्यक्तियों के जोड़ों के बीच होता है इसे परिवार जैसे छोटे अतरंग समूहों को शामिल करने के लिये भी बढ़ाया जा सकता है। पारस्परिक संचार पर जैविक और शारीरिक दृष्टिकोण में रूचि बढ़ रही है। ये पारस्परिक कौशल सकारात्मक बातचीत के निर्माण में योगदान देनें वाले प्रमुख तत्वों का प्रतिनिधित्व करतें हैं। हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि पारस्परिक कौशलों के साथ ही साथ किसी की जरूरतों और भावनाओं के समायोजन का निर्माण कैसे किया जाता है। यदि इन पारस्परिक कौशलों को वास्तविकता की भावना और एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार स्वयं का साथ सहसंबंध नहीं किया जाता है, तो सच्ची व्यक्तिगत संतुष्टि पर प्राप्त एक दोषपूर्ण सामाजिक सफलता का जोखिम होता है।

सम्बन्धित साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य को करने से पूर्व उस शोध से संबंधित साहित्य की समीक्षा करना प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि और सांवेगिक बुद्धिलब्धि का अध्ययन।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।

उद्देश्य- इस अध्ययन का उद्देश्य पारस्परिक संचार कौशल विकसित करने में भावात्मक बुद्धिमत्ता भूमिका की पहचान करना है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परिकल्पना

शोध परिकल्पना जिस धारणा से हमारा शोध शुरू होता है, वह यह है कि भावनात्मक संचार और पारस्परिक संचार कौशलों के विकास में भावात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का मूल्यांकन आवश्यक है।

शोध अभिकल्प

शोधविधि

समस्या की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या, न्यादर्श विधि एवं न्यादर्श

- **शोध अध्ययन की जनसंख्या-** शोध अध्ययन की जनसंख्या के अन्तर्गत अम्बेडकरनगर के बी.एड. कॉलेज के विद्यर्थियो एवं शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।
- **प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श विधि-** अध्ययन हेतु न्यायदर्श का चयन स्तरिकृत याद्दच्छिकरण विधि द्वारा किया जायेगा।
- **शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श-** प्रस्तुत शोध अध्ययन के हेतु न्यादर्श के रूप में अम्बेडकरनगर जनपद के बी.एड. कॉलेज के 50 विद्यार्थियों और 50 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया जाएगा।
- **प्रयुक्त उपकरण-** प्रस्तुत शोध में सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. एस के मंगल एवं श्री मती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मानकीकृत इमोशनल इन्टेलिजेन्स इनवेन्ट्री का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकी विधियाँ

संकलित प्रदत्तों एवं ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी-परीक्षण, सह-सम्बन्ध आदि सांख्यिकी की विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निष्कर्ष

भावात्मक बुद्धिमत्ता हमारी भावनाओं को नियंत्रित करनें की क्षमता पर हमारे अंदर बुनियादी मानव कौशल पर ध्यान केन्दित करती है। एक सकारात्मक बातचीत के लाभ के लिए कुशलता से संचार करने की क्षमता भावनात्मक बुद्धि का एक उदाहरण बन सकती है। भावनात्मक बुद्धि मे एक यूनिपर्सनल से एक दिवैयक्तिक दृष्टिकोणों से गुजरना होता है। स्व वैक्तित्व को जानने की आन्तरिक क्षमताओं से अंतःक्रिया में स्थानांतरित किए गए पारस्परिक कौशल तक भावनाओं को समझने और पारस्परिक संबंधों में बुद्धिमानी से कार्य करनें क्षमता ताकि संचार कौशल और सामंजस्यपूर्ण संबंधों को विकसित करनें में योगदान दिया जा सके।

संदर्भ

अग्रवाल, विमलेश एवं गुप्ता, नीरू (2011). सामाजिक जागरूकता में संचार साधनों की भूमिका : एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, त्रैमासिक रचना, अंक 10, मई—जून 2011 मध्यप्रदेश भासन उच्च शिक्षा विभाग एवं हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, म.प्र.।

अरूण, कनौजिया (2002). संचार कौशलों के विकास में बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन, आईजेआरएसटी. नई दिल्ली।

मालवीय, राजीव (2016). शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना संप्रेशण तकनीकी. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

यादव, सरोज (2009). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध आगरा : आर0 एस0 ए0 इण्टरनेशनल।

मिश्रा, रामबचन (1995) किशोर बालकों की संवेगात्मक स्थिरता का एक अध्ययन, समानुभूति, पीयर रिव्यूड इंटरनेशनल जर्नल, उ.प्र.।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies